Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington Gail 01st March 2020 Shift 1 T1
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2020-03-01 13:35:26
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No
Show Watermark on Console?:	No
Highlighter:	No
Auto Save on Console?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	2549892359
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Show Attended Group? :	No
Edit Attended Group? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0
Is this Group for Examiner?:	No

Hindi Typing Test

Section Id :	2549893407
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0

Sub-Section Number:	1

mpcareer.in

Sub-Section Id: 2549893420
Question Shuffling Allowed : No

Question Number : 1 Question Id : 25498938653 Question Type : TYPING TEST

एक बार की बात है, अकबर और बीरबल शिकार पर जा रहे थे। अभी कुछ समय हुआ था कि उन्हें एक हिरण दिखा। जल्दबाजी में तीर निकलते हुए अकबर अपने हाथ पर घाव लगा बैठा। अब हालात कुछ ऐसे थे कि अकबर बहुत दर्द में था और गुस्से में भी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number : 2
Group Id : 2549892360
Group Maximum Duration : 15
Group Minimum Duration : 15
Show Attended Group? : No
Edit Attended Group? : No
Break time: 0
Group Marks: 0
Is this Group for Examiner?: No

Hindi Typing Test

Section Id : 2549893408
Section Number : 1
Section type : Typing Test
Mandatory or Optional: Mandatory
Number of Questions: 1
Number of Questions to be attempted: 1
Section Marks: 0

Sub-Section Number: 1
Sub-Section Id: 2549893421
Question Shuffling Allowed : No

Question Number : 2 Question Id : 25498938654 Question Type : TYPING TEST

mpcareer.in

यह समझना गलत है कि मांस में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, इसलिए वह पोष्टिक आहार है। मांस में केवल 7 प्रतिशत प्रोटीन होता है जबकि उसकी मात्रा पनीर में 25 प्रतिशत और सोयाबीन में 40 प्रतिशत तक पाई जाती है। लोहे का अंश मांस में होता तो है पर वह दूध एवं वनस्पतियों में मिलने वाले लोहे की अपेक्षा मात्रा में भी कम है और स्तर में भी घटिया है। शरीर को प्रतिदिन जितने लोहे की बावश्यकता पडती है, उसकी पूर्ति के लिए डेढ पौंड मांस अथवा साढे सात पौंड मछली खानी पडेगी। लौह वस्तुत: मांस में नहीं रक्त में होता है। मांस में जितना अंश रक्त का रहा होगा, उसी आधार पर लोहा पाया जायगा, फिर प्राणियों के रक्त से मिला लौळ दुष्पाच्य होता है और आसानी से मानव रक्त में नहीं घुलता, जबकि वनस्पतियों में रहने वाला लोहा बडी सरलतापूर्वक हमारे शरीर में घुल जाता है। कैल्शियम मांस में नहीं के बराबर होता है, वह कडे पुट्ठों में एवं हडि्डयों में ही पाया जाता है। कोमल मांस जो आमतौर से खाया जाता है, उसमें एक प्रतिशत से भी कम कैल्शियम है। मछली में वह कुछ अधिक अवश्य होता है पर रोटी से अधिक नहीं। मांस में रहने वाली खनिज गैस शरीर में जाकर संचित क्षार तत्व को नष्ट करती है, रक्त चाप की वृद्धि एवंमूत्र में एसिड उत्पन्न करती है। जीवित पशु के तंतु अत्यंत कोमल होते हैं किंतु उसके मरते ही कडे हो जाते हैं। यह कडापन पकने और पचने में भारी पडता है। जब मांस सडता है तभी वे तंतु कोमल पडते है। इसलिए ताजे माँस को कुछ समय हवा में लटका कर रखा जाता हे ताकि वह सडने लगे और मुलायम हो जाए, सडन आरंभ होने के साथ-साथ ही उसमें कई प्रकार के विष उत्पन्न् होने लगते हैं और कई घातक कीटाणुओं का जन्म होता है। यह सडन शरीर में पहुंच कर न जाने कितने प्रकार के उपद्रव खडे करती है और खाने वाले के स्वास्थ्य को धीरे-धीरे खोखला ही करती जाती है। रक्त चाप और गुर्दे की बीमारियों में आमतौर से डाक्टर मांस खाने को मनाही करते हैं। वे जानते हैं कि जब भले-चंगे आदमी में मांस इस प्रकार की बीमारियां उत्पन्न् करता है तो रोगग्रस्तों पर और भी अधिक बुरा प्रभाव डालेगा। पशुवृत्ति और पशु प्रकृति का प्रभाव मांस में जुडा रहना स्वाभाविक है। मांसाहारी हिंस्त्र पशुओं में जो क्रूरता पाई जाती है, उसे मांसाहार का प्रत्यक्ष परिणाम ही कह सकते हैं। मनुष्य भी इस दुष्प्रभाव से बच नहीं सकता। उसके स्वभाव में आसुरी तत्व बढते ही जायेंगे। उनकी प्रतिक्रिया शरीर, मन, परिवार और समाज पर अवांछनीय स्तर की ही पडेगी। माँस महंगा है, दुष्पाच्य है, काटे हुए पशुओं में से अधिकांश के रूग्ण होने से उनकी बीमारियां खाने वालों में घुस पडने का खतरा है। इतने पर भी पौष्टिकता के नाम पर जिस प्रोटीन का मांस में बाहुल्य बताया जाता है, वह भी इतना घटिया है कि उससे सोयाबीन जैसे अन्न कहीं अधिक अच्छे सिद्ध होते हैं। प्राणिवध का क्रूर कर्म साथ ही स्वास्थ्य का विनाश देखते हुए कई बार लगता है कि कही बर्बरता को जीवित रखने के लिए ही तो मांसाहरी प्रवृत्ति को जीवित नहीं रखा जा रहा है।

mpcareer.in

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

mpcareer.in